अध्याय–7

मुक्ति योद्धाओं के शिविर में

–विष्णुकांत शास्त्री

हम लोगों की पिकअप की हेड लाइट की भरपूर रोशनी में तनी हुई संगीन चमक उठी। झटका खाकर जीप रुक गई। कैप्टेन रशीद खड़े हुए, उनको देखते ही संतरी ने सलाम ठोंका। दरवाजा खुला और हम लोगों ने मुक्ति योद्धाओं के शिविर में प्रवेश किया।

कलकत्ते से 200 मील दूर उत्तर बांग्लादेश के किसी अंचल में अवस्थित उस शिविर के जवानों से मिलने के लिए एक जीप तथा दो मोटरों में हम लोग 16 मई को सुबह साढ़े नौ बजे कलकत्ते से रवाना हुए थे, हम लोग यानी कलकत्ता विश्वविद्यालय बांग्लादेश सहायक समिति के मंत्री प्रो. दिलीप चक्रवर्ती, मैं, विश्वभारती के तीन प्राध्यापक, दो अध्यापिकाएँ, दो समाज सेविकाएँ और बांग्लादेश मिशन के एक विशिष्ट प्रतिनिधि। अपने देश की जनता की आंतरिक सहानुभूति के प्रतीक के रूप में हम लोग काफी असामरिक सामग्री उन्हें भेंट देने के लिए ले गये थे। जेठ की तपती दुपहरी और लंबी यात्रा ने तन को थका तो दिया था किन्तु मन उत्साह से भरा था जब हम लोग कुछ अनिवार्य कारणों से रुक–रुककर सांझ के समय सीमा पर पहुँचे। सीमावर्ती भारतीय अधिकारियों के स्नेह, सौजन्य एवं सहयोग को तो हमने स्वीकारा किंतु चाय–शाय के चक्कर में नहीं पड़े। मार्गदर्शक मिलते ही हम लोग आगे बढ़े।

साढ़े सात के करीब हम लोग बांग्लादेश की मुक्ति फौज के स्थानीय अधिकारी कैप्टेन रशीद के छोटे से प्रशासनिक शिविर में पहुँचे। कैप्टेन ने प्रेम से हम लोगों का स्वागत किया। पहले वे पाकिस्तान की रेगुलर आर्मी में थे। फिर पूर्वी बंगाल के किसी सैन्य प्रशिक्षण केंद्र में थे। उत्तरदायित्व का बोध और संघर्ष का संकल्प उनके चेहरे पर स्पष्टतः अंकित था। पाकिस्तानी फौज से हुई कई मुठभेड़ों का नेतृत्व वे कर चुके थे। आधुनिकतम शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित पाकिस्तानी सैन्यबल के सम्मुख उनकी टुकड़ी टिक नहीं पाई, किन्तु दुश्मन को उन्होंने करारी चोटें पहुँचाई थीं। उनकी कर्मठता और योग्यता का सबसे बड़ा प्रमाण यही था कि अत्यंत प्रतिकूल परिस्थितियों में भी उन्होंने अपनी टुकड़ी को बिखर जाने से बचाया था और एक लंबे युद्ध की आवश्यकताओं के अनुसार अब नये सिरे से उनका पुनर्गठन कर रहे थे। लड़ाई की कठोरता ने उनके चेहरे को सख्त बना दिया था किंतु अब भी वे हँस सकते थे।

मुझे सबसे ज्यादा हैरानी यह देखकर हुई कि तीस–पैंतीस मिनट की बातचीत में उन्होंने कोई शिकायत नहीं की, न भाग्य की, न नेतृत्व की, न सामग्री के अभाव की। जो नहीं हो सका, वह क्यों नहीं हो सका? इसके बारे में हवाई तर्क करने और दूसरों को दोष देने की सामान्य मानवीय दुर्बलता उनमें नहीं दिखी। राजनीतिक चर्चा में भी उन्होंने कोई रुचि नहीं दिखाई। हमारे एक साथी ने जब बांग्लादेश की विभिन्न राजनीतिक पार्टियों में व्याप्त मतभेदों की चर्चा करते हुए कुछ की आलोचना शुरु की तो उन्होंने उस प्रसंग को बंद करते हुए कहा, ''मैं सिपाही आदमी हूँ। इतना जानता हूँ कि पाकिस्तानियों ने तेईस सालों तक लगातार मेरे देश का शोषण किया है, हमें गुलाम बनाकर रखा है। इस लड़ाई में उन्होंने जिस विश्वासघातकता तथा पशुता का परिचय दिया है, उससे यह साफ है कि वे हमारे देश को अपने कब्जे में रखने के लिए नीचता की किसी भी सीमा तक जा सकते हैं। इसका एक ही जवाब है, जीतने तक युद्ध करते जाना। इन परिस्थितियों में लड़ाई कैसे चल सकती है? कैसे सफल हो सकती है? मेरी समस्या यही है। राजनीतिक दांवपेच मैं नहीं जानता। उसके लिए आप इनसे बातचीत कीजिए।'' इस दो–टूक उत्तर ने मुझे जीत लिया। बंगाली अल्पभाषी भी हो सकता है और राजनीति–चर्चा–विरत भी, यह मेरे लिए नयी अभिज्ञता थी। इस युद्ध से, बल्कि शेख मुजीब के पूरे आन्दोलन से पूर्व बंगाल के लोगों में नयी चेतना का उदय हुआ है, इसमें कोई संदेह नहीं।

हम लोग इधर बातचीत कर रहे थे, उधर वीणा दी, मीना जी सूची से मिला–मिलाकर सब सामग्री क्वाटर्स मास्टर को संभला रही थीं। बातचीत के मध्य हमें पता चला कि जहाँ हम थे, उसके इर्द–गिर्द ही दो शिविर और थे, एक नये रंगरूटों का, दूसरे पुराने ई.पी.आर. के उन जवानों का, जो लड़ाई में हिस्सा ले चुके थे और उनकी संख्या पचास के करीब थी। उन्हें सैनिक शिक्षा दी जा रही थी। पुराने जवानों की संख्या 250 के करीब थी और अब उन्हें विशेष रूप से गुरिल्ला युद्ध के लिए प्रशिक्षित किया जा रहा था। स्वभावतः हम लोगों ने उनसे मिलने की इच्छा प्रकट की। कैप्टेन मुस्काराए बोले, ''अच्छा आप लोग इतनी दूर से चले आ रहे हैं, थोड़ा सुस्ता लीजिए और नाश्ता कर लीजिए, फिर मैं आप लोगों को ले चलूँगा।'' नाश्ते पर हम लोगों ने आपत्ति की, पर कैप्टन नहीं माने, बोले, ''आप लोग हमारे मेहमान हैं, हम लोगों के लिए इतनी चीजें लाए हैं, यह कैसे हो सकता है कि हम लोग आप लोगों की खातिर न करें ?''

जवानों का शिविर उस स्थान के करीब डेढ़–दो मील दूर था। रास्ता कच्चा और खराब था, अतः हम लोगों की दोनों गाड़ियाँ वहीं रही। मुक्ति–फौज की बड़ी पिकअप जीप आगे–आगे और अपनी जीप पीछे–पीछे चली। मैं कैप्टेन के साथ अगली जीप में था। कैप्टेन के साथ स्टेनगन लिए उनका अंगरक्षक भी था।

चाँद अभी तक नहीं निकला था। घोर निस्तब्धता और घने अंधेरे के बीच उस ऊबड़–खाबड़ रास्ते पर दौड़ रही थीं दो जीपें, जिनकी हेड–लाइट अंधेरे को चीरकर प्रकाश के झरने के समान झर रही थीं। ऊपर तारों भरा निर्मल आकाश था। कलकत्ते के धूल और धुँए से भरे आकाश में इतने तारे कहाँ से दिखते हैं और यह हवा – यह उन्मुक्त प्राकृतिक विस्तार। सामने से कोई जंतु दौड़ गया। ब्रेक के झटके ने विचारधारा को भी झकझोर दिया। लगा ऐसा ही अंधेरा बांग्लादेश के ऊपर भी छा गया है, क्या वह दूर होगा? और तभी मेरे मन में कौंध गई नसीमुन आरा की पंक्तियाँ ''ए आंधार कूलप्लावी कत क्षण दूबे, तिमिर हननेर आमर कंठे.....'' मतलब किनारों को डुबो देने वाला अंधेरा टिक सकेगा कितनी देर,

अंधेरे को चीर देने वाला गान मेरे कंठ में..... कैप्टेन रशीद और उनके साथी अंधेरे को चीर देने की साधना में ही तो लगे हैं। तभी संतरी की आवाज सुनकर मैं भावजगत से फिर वस्तुजगत में आ गया।

एक बड़ा–सा मैदान, जिसके बीचोंबीच विशाल बरगद का पेड़, दो तरफ फौजी छावनी। हम लोगों की जीपें अहाते में घुसीं तो जवान बाहर निकल आए। बांग्लादेश मिशन के जो प्रतिनिधि हम लोगों के साथ आए थे, वे जवानों को संबोधित कर कुछ कहने वाले थे अतः कैप्टेन ने उन्हें करीने से व्यवस्थित कर बैठा दिया। रास्ते के पड़ावों में हम लोग रवीन्द्रनाथ के देशभक्ति–मूलक गीत–गाते और कविताएँ सुनते–सुनाते आये थे। अब स्वाभाविक था कि हम लोगों से जवानों को गीत, कविता आदि सुनाने का अनुरोध किया जाता। हम लोगों ने प्रसन्नतापूर्वक इसे स्वीकार कर लिया।

चारों तरफ के अंधेरे से जूझती हुई चार लालटेनें, इधर–उधर के संतरियों की बीच–बीच में चमक उठने वाली टार्चें, बरगद के पेड़ के नीचे दो मेजें, कुछ कुर्सियाँ, सामने व्यूहबद्ध ढाई सौ मुक्तियोद्धा। कुल मिलाकर रहस्यपूर्ण रोमांचक वातावरण। सेकेंड इन कमांड ले. टून्नूमियां उस फौजी–सांस्कृतिक कार्यक्रम का संचालन कर रहे थे। उन्होंने घोषणा की सबसे पहले बांग्लादेश का राष्ट्रगीत गाया जाएगा। पार्थ, वीणा दी, मीना जी तथा अन्यों के परिशीलित सुरीले शांतिनिकेतन स्वर गूँजे, ''आमार सौनार बांगला, आमी तोमार भालोवासी।'' जवानों के साथ–साथ हम बस 'सावधान' की मुद्रा में खड़े हो गये। ओ मेरे सोने के बंगाल, मैं तुम्हें प्यार करता हूँ। देश को कैसे प्यार किया जाता है? क्या देशप्रेम केवल जबानी जमा–खर्च है? नहीं, नहीं, देश की प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए अपना जीवन, अपना सब कुछ बलिवेदी पर चढ़ाने के लिए जो तत्पर न हो, उसे क्या हक है यह कहने का कि 'ओ मेरे देश, मैं तुम्हें प्यार करता हूँ।' मेरे सामने जो लोग खड़े थे उन्होंने अपना सब कुछ होम दिया था और अब प्राणों को हथेली पर लिए दुश्मन से जूझने को, उसे मार भगाने को कटिबद्ध थे। हाँ, उन्हें हक है कि वे यह कहें, 'आमार सोनार बांगला, आमी तोमार भालोवासी।'

फिर मेरा नाम पुकारा गया, परिचय देने के बाद मुझसे कहा गया कि मैं बांग्लादेश की नयी संग्रामी कविताएँ सुनाऊँ। कविताएँ सुनाना मेरा नशा है मुझसे कहा गया किन्तु उतनी तन्मयता से मैंने शायद ही कभी कविताएँ सुनाई हों। पहले सुनाई सिकंदर अबू जफर की कविता 'आमादेर संग्राम जलवेइ'। 'अंधेरी कब्रगाह में उषा के बीज' बोने वालों का दृढ़ संकल्प व्यंजित हुआ है उस कविता में। मैंने उसका अनुवाद भी किया है, उसकी आरंभिक पंक्तियाँ हैं–

दी तो है शांति, देंगे स्वस्ति भी

दे चुके संभ्रम, देंगे अब अस्थि भी

प्रयोजन हुआ तो देंगे नदी भर रक्त

हो लें पथ बाधा के पत्थर और सख्त

अविराम यात्रा के लिए चिर संघर्ष से

एक दिन पहाड़ बह चलेगा ही

चलेगा ही, चलेगा ही, संग्राम यह चलेगा ही।

कविता शेष हो गई लेकिन मुझे लगा कि श्रोताओं की प्यास बुझी नहीं है। मैंने दूसरी कविता सुनाई नसीमुन आरा की 'तिमिर हननेर गान आमार कंठे, आमार हाते इ चाबी आवसी दिनेर' किसी बड़े उद्देश्य को जब कोई कवि अपनी संपूर्ण भावात्मक सत्ता द्वारा स्वीकार कर लेता है, तो उसका स्वर कितना उदात्त हो जाता है। सिकंदर और नसीमुन दोनों अभी छात्र ही हैं, किन्तु ये कविताएँ कितनी वजनदार हैं, कितनी धारदार हैं। मेरा काव्य–पाठ ज्यों ही समाप्त हुआ, स्वतः स्फूर्त तालियों की गड़गड़ाहट से परिवेश गूँज उठा। मुझे खुशी हुई कि जवानों ने इन कविताओं को पसंद किया।

बांग्लादेश मिशन के प्रतिनिधि ने अपने संक्षिप्त किन्तु तेजस्वी भाषण में कहा कि लड़ाई चालू है और आखिरी जीत तक चालू रहेगी। जीत हमारी होगी ही क्योंकि हमारी सारी जनता इस शोषण और गुलामी का केवल सीमावर्ती अंचलों में ही नहीं, बांग्लादेश की समस्त भूमि पर विरोध करती है। हमारी लड़ाई किस जोशखरोश के साथ चालू हो जाती है, उसके विषय में अभी मैं और क्या कहूँ ?

अपने शिविर पहुँचकर कैप्टेन ने फिर एक बात पर हम लोगों को धन्यवाद दिया। मैं अपने साथ धर्मयुग के बांग्लादेश विशेषांक की एक प्रति ले गया था जो मैंने उन्हें भेंट की और चाहा कि यदि कोई मुद्रित या लिखित साहित्य उनके पास हो तो मुझे दें। वे बोले कि हम लोग अभावों के बीच जी रहे हैं, न हमारे पास यथेष्ट शस्त्रास्त्र हैं, न दवाइयाँ, न पैसा ही। इसलिए हम अभी तक अपना साहित्य मुद्रित, प्रकाशित नहीं कर पाए हैं। हम जानते हैं कि इसकी बहुत जरूरत है, हम इसकी योजना भी बना रहे हैं, पर अभी तो मैं आपको एक छोटे से पर्चे के अतिरिक्त और कुछ नहीं दे सकूँगा। यह पर्चा हमने बड़ी संख्या में बांग्लादेश की सामान्य जनता में बाँटा है। मैंने आग्रहपूर्वक उस पर्चे की मांग की। वे भीतर गये, दो कागज लिए हुए बाहर आए और मुझे देते हुए बोले, ''लीजिए यह तो वह छपा हुआ पर्चा है और यह है हम लोगों के दैनिक प्रशिक्षण का कार्यक्रम। इससे आप समझ सकेंगे कि हम लोग दिन के समय क्या करते हैं। रात की कार्रवाई का कुछ संकेत तो मैं आपको दे ही रहा हूँ।''

विदा का क्षण आया। दोनों हाथों से कैप्टेन का दाहिना हाथ दबाते हुए मैंने कहा, ''भगवान ने चाहा तो हम लोग फिर मिलेंगे, यहाँ भी और ढाका में भी।'' मृत्यु की भर्त्सना दिन–रात हम ढोते हैं' के अंदाज में वे मुस्कुराए और बोले, 'जय बांगला'। हम सबने दुहराया, 'जय बांगला'।

मेरे सामने उनके दिए हुए दोनों कागज पड़े हैं। सुबह साढ़े पाँच से रात के दस बजे तक का व्यस्त सैनिक कार्यक्रम। गुरिल्ला योद्धाओं को विस्फोटकों, मोर्टरों, मशीनगनों, हथगोलों आदि का प्रयोग तो सिखाया ही जाता है, सामाजिक एवं राजनीतिक नेतृत्व की उनकी क्षमता के विकास पर भी पूरा जोर दिया जाता है। ध्वंस और निर्माण दोनों साथ–साथ ही तो चलते हैं।

दूसरा कागज अपने देश की जनता के प्रति किया गया मुक्तियोद्धाओं का निवेदन है, जिसमें उन्होंने अपने स्वरूप और लक्ष्य को स्पष्ट किया है। इसका प्रकाशन तब हुआ था जब बांग्लादेश में मुख्य नगरों और यातायात के साधनों पर उनका अधिकार था। आज स्थिति बदल गई है, फिर भी उनका मौलिक स्वरूप और लक्ष्य नहीं बदला है। अतः उनके बलिदानी प्रयास की सफलता की कामना करते हुए मैं यह उचित समझता हूँ कि उनकी बात का मुख्य अंश उनके शब्दों में आप तक पहुँचा दूँ –

''हम स्वाधीनता और गणतंत्र के विश्वासी हैं। मनुष्य की तरह जीना चाहते हैं। इसलिए हम संग्राम कर रहे हैं। हम बांग्लादेश में जुल्मबाजी नहीं चाहते। हम संत्रासपूर्ण शासन से मुक्ति चाहते हैं,

इसलिए हम संग्राम कर रहे हैं। जिस दिन तक हम साढ़े सात करोड़ बंगाली स्वाधीन बांग्लादेश के नागरिक नहीं बन जाते, उस दिन तक यह संग्राम शेष नहीं होगा। शांति और गणतंत्र के शत्रु हमारी स्वाधीनता की आकुलता को कुचल देना चाहते हैं किन्तु वे पूर्णतः पराजित होंगे ही (हम लोगों की जय सुनिश्चित है)

मुक्तियोद्धा आप लोगों के समर्थन की कामना करते हैं। प्रत्यक्ष संग्राम में योग देना यदि आपके लिए संभव न हो, तो भी दूसरी तरह से सहायता करने के लिए बहुत से रास्ते खुले हैं। ... शांति, स्थिर रहें, मन मजबूत रखें। स्वाधीनता हम लोगों का जन्मगत अधिकार है। हम लोगों की जय होगी ही। जय बांग्ला।''

अभ्यास के लिए प्रश्न

प्र. 1 फौजी सांस्कृतिक कार्यक्रम का संचालन कौन कर रहा था –

(क) डॉ. टुन्नुमिया (ख) ले. करीम

(ग) ले. अल्लामिया (घ) केप्टन मोहम्मद मिया ( )

प्र. 2 लेखक ने जो दूसरी कविता सुनाई, वह किसके द्वारा रचित थी –

(क) सिकंदर अबूजफर (ख) नसीमुन आरा

(ग) तसलीमा (घ) हैदर अली ( )

प्र. 3 सिकंदर और नसीमुन क्या थे –

(क) शिक्षक (ख) विद्यार्थी

(ग) व्यापारी (घ) मजदूर ( )

प्र. 4 बांग्लादेश की मुक्तिफौज के स्थानीय अधिकारी कैप्टन का क्या नाम था ?

प्र. 5 लेखक के अनुसार कैप्टन के चेहरे पर स्पष्टतः क्या अंकित था ?

प्र. 6 पूर्वी बंगाल के लोगों में नयी चेतना का उदय किस कारण हुआ ? समझाइए।

प्र. 7 कैप्टन किस साधना में लगे थे ?

प्र. 8 पुराने जवानों को किस युद्ध के लिए प्रशिक्षित किया जा रहा था ?

प्र. 9 बांग्लादेशी किस देश से तथा क्यों युद्ध कर रहे थे ? बताइए।

प्र. 10 कलकत्ता से बांग्लादेश के शिविर में जवानों से मिलने के लिए कौन–कौन रवाना हुए ?

प्र. 11 कैप्टन ने राजनीतिक चर्चा बंद करते हुए क्या कहा ?

प्र. 12 शिविरार्थियों द्वारा लेखक से क्या अनुरोध किया गया और लेखक ने उसे कैसे पूर्ण किया?

प्र. 13 आमार सोनार बांग्ला गीत का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

प्र. 14 लेखक द्वारा सुनाई गई सिकंदर अबूजफर की कविता का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

प्र. 15 कैप्टन ने लेखक को जो दो पत्र दिए, उनमें क्या लिखा हुआ था ? समझाइए।

पाठ के आसपास

अपने शिक्षक के निर्देशन में भारतीय स्वाधीनता संग्राम पर समूह चर्चा कीजिए।

कठिन शब्दार्थ

मुक्ति–योद्धा – बांग्लादेश के स्वतन्त्रता सेनानी / साँझ – शाम का समय / रेगुलर – नियमित / दाँवपेच – कार्य सिद्ध हेतु विभिन्न उपाय / दो टूक उत्तर देना– सीधा उत्तर देना / अल्पभाषी– कम बोलने वाला / अभिज्ञता– जानकारी / गुरिल्ला युद्ध– छिप कर युद्ध करने की पद्धति / खातिर करना– आवभगत करना / निस्तब्धता– शांति / निर्मल– स्वच्छ / भावजगत– कल्पना लोक / वस्तुजगत– यथार्थ लोक / व्यंजित होना– प्रकट होना / तेजस्वी– तेजयुक्त, प्रतापी, कांतिमान / यथेष्ट– पर्याप्त / संत्रास– अत्याचार